Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन (सागर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

श्रीमती त्रिवेणी ठाकुर* डॉ. शैलेन्द्र सिंह तोमर**

* शोधार्थी (भूगोल) शासकीय के.आर.जी. स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय के.आर.जी. स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – उक्त शोधपत्र सागर जिले से दैव निदर्शन विधि द्वारा 247 चयनित ग्रामीण परिवारों में जल की उपलब्धता, जल आपूर्ति प्रणालियों, जल उपयोग एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता की स्थिति का अध्ययन किया गया है। शोध के निष्कर्ष दर्शाते है चयनित ग्रामीण परिवारों में वास्तविक जल उपभोग दिशा निर्देशों के अनुमान से बहुत अधिक है। आय स्तर, शिक्षा, परिवार की प्रकृति एवं आकार जैसे कारक जल–बचत व्यवहारों के कार्यान्वयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। जल संरक्षण के प्रति व्यवहार एवं सामाजिक–आर्थिक कारकों के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध है। ग्रामीण परिवारों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक–आर्थिक कारकों के अतिरिक्त वित्तीय प्रोत्साहन, जल संरक्षण तकनीकी शिक्षा और जल उपयोग की व्यावहारिक प्रवृत्ति में परिवर्तन के प्रति अधिक प्रयास की आवश्यकता है।

प्रस्तावना – जीवन, कृषि और आर्थिक विकास के लिए जल एक मूलभूत संसाधन है। ग्रामीण समुदाय अपनी आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। जलवायुए पर्यावरणीय और मानवजनित कारकों के संयोजन के कारण जल संकट की समस्या से जूझ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों के सामने जल संकट एक गंभीर चुनौती है जिसका कृषि, स्वास्थ्यए सामाजिक.आर्थिक परिस्थितियों, लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक समरसता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।[1] भौतिक विकास की अंधी दौड़, उपभोक्तावाद तथा बाजारवाद समूचे पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। आधुनिक भौतिक विकास के असंतुलन ने प्रकृति के अवयवों के बीच के ताने–बाने को तहस–नहस कर दिया है।[2] अपर्याप्त जल संसाधनों एवं उपलब्ध स्रोतों की सुरक्षा एवं संरक्षण में लापरवाही ग्रामीण आजीविका, स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए खतरा हैं। पर्याप्त और स्वच्छ जल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सतत जल प्रबंधन पद्धतियाँ, जलवायु परिवर्तन शमन और संस्थागत क्षमता का सुदृढ़ीकरण आवश्यक है।[3] भूजल का स्तर देश के अधिकांश भागों में तेजी से नीचे जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के अनिवार्य साधन हैंडपंप, कुएं तथा बावड़ी जैसे पारंपरिक जलस्रोत तेजी से सूखते जा रहे हैं। नलकूप ज्यादा गहराई से पानी खींच रहे हैं। जल संरक्षण के प्रति लापरवाही भयावह जल संकट की ओर संकेत कर रहे हैं।[4] ग्रामीण जल संरक्षण के प्रति शासन एवं प्रशासन स्तर अनुकूलनीय रणनीतियाँ और नीतिगत हस्तक्षेप जल संकट से निपटने के लिए विभिन्न स्तरों पर समन्वित और निरंतर प्रयास किये जा रहे है। जल संरक्षण के प्रति शासकीय योजनाओं कार्यक्रमों का ग्रामीण समुदाय एवं परिवारों पर प्रभाव की जांच की गई है।

साहित्य समीक्षा:

1. श्री प्रसाद, सुखदेव (2010)[5] के अनुसार विकास के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर औद्योगिक क्रांति के कुछ प्रासंगिक प्रभाव प्रदूषण के रूप में लगातार विकराल रूप धारण कर रहे हैं। इसके कारण कुओं, तालाबों, नदियों, यहाँ तक कि भूजल स्रोतों के जल प्रदूषण का दायरा दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों में जल के बड़े हिस्से के प्रदूशित होने को लेकर व्यापक चिंता व्यक्त की जा रही है।

2. Werts. D. Joshua., Mihailova. A. Elena., Post. J. Christopher., Sharp. L. Julia.(2012)[6] के अनुसार'सामाजिक और जल संरक्षण में स्वयंसेवी संगठन लोगों को मिट्टी और पानी के संरक्षण में सार्वजनिक भागीदारी बढ़ाने के लि सोशल मीडिया जल संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने का एक प्रभावी माध्यम हैं।'

3. अरोड़ा कुमार सुनील. (2022)[7] ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता और जल सेवाओं के साथ–साथ स्वास्थ्य प्राप्ति का स्तर कम है। जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं से संबंधित विश्लेषण किया गया है। जल संसाधनों और बुनियादी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की कीमत पर संघर्षों पर अत्यधिक केंद्रित है। जल प्रबंधन चक्र के सभी पहलुओं में लोगों के ध्यान देने की दिशा में और अधिक पहल की आवश्यकता है।

4. अरिन एवं डॉ. कुँवर सुरेन्द्र बहादुर (2023)[8] भारत के किसी भी क्षेत्र में जल की उपलब्धता वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों और वर्षा जल की मात्रा पर निर्भर करती है। किन्तु, विकास के इस दौर में भौगोलिक संरचनाओं में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। विभिन्न जल संसाधनों के उपभोग/उपयोगिता और विलुप्ति ने जल उपलब्धता के आयामों को बदल दिया है। अब जल पर सभी पारिस्थितिक आयामों का प्रभाव महत्वपूर्ण होता जा रहा है। दूसरी ओर, प्रदूषण शब्द सभी क्षेत्रों के लिए सामान्य हो गया है।

5. नंदकिशोर सक्सेना, डॉ. सिंधु जे. नायर (2025)[9] विकास के साथ–साथ अन्य संसाधनों की तरह जल की बढ़ती माँग एक सामान्य प्रक्रिया है। जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, रहन–सहन में बदलाव आदि के कारण भूजल पर दबाव बढ़ रहा है, जिसका प्रभाव कई क्षेत्रों में भूजल स्तर और गुणवत्ता में

गिरावट के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति सामान्य व्यवहार का अध्ययन करना।

परिकल्पना:

H_{a1}: ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति एवं घरेलू कार्यो में उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है।

H_{a2}: जल संरक्षण के प्रति व्यवहार का सामाजिक कारकों के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों हेतु शोध सर्वेक्षण मध्यप्रदेश के सागर जिले को समग्र मानते हुए कुल 247 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन विधि के आधार पर किया गया है।

तथ्य विश्लेषण – सागर जिले से दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित एवं साक्षात्कार में सम्मिलित उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत जानकारी का वर्णन तालिका – 1 में किया गया है–

तालिका – 1, उत्तरदाता की व्यक्तिगत जानकारी (न्यादर्श –247)

क्र.	विवरण	वर्गीकरण	प्रतिशत
1	लिंग	पुरूष	78.54%
		महिला	21.46%
2	आयु	18 से 45 वर्ष	59.51%
		46 वर्ष से अधिक	40.49%
3	शैक्षणिक स्तर	अशिक्षित	16.19%
		माध्यमिक अथवा कम	63.17%
		स्नातक अथवा अधिक	20.64%
4	परिवार की प्रकृति	एकल	34.82%
		संयुक्त	65.18%
5	परिवार में सदस्यों की संख्या	1 से 4 सदस्य	23.08%
		5 से 8 सदस्य	57.49%
		9 से अधिक सदस्य	19.43%
6	व्यवसाय का प्रकार	कृषि	66.80%
		व्यवसाय	25.51%
		नौकरी	7.69%
7	जल आपूर्ति के स्रोत	कुआँ/ हैण्ड पम्प	26.72%
		सार्वजनिक जल प्रदाय	49.80%
		अन्य	23.48%

स्रोत:– प्राथमिक समंकों पर आधारित।

ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन के लिए दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित उत्तरदाताओं में 78.54 प्रतिशत पुरूष एवं 21.46 प्रतिशत महिलाएँ है। आयु के अनुसार वर्गीकरण के अन्तर्गत 59.51 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 18 से 45 वर्ष है। 40.49 प्रतिशत उत्तरदाता 46 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के अन्तर्गत है। शैक्षणिक योग्यता के अन्तर्गत 16.19 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित है। 63.17 प्रतिशत माध्यमिक अथवा कम स्तर तक शिक्षित है। 20.64 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक अथवा अधिक शिक्षित है। परिवार की प्रकृति के अन्तर्गत वर्गीकरण में 34.82 प्रतिशत एकल परिवार एवं 65.18 प्रतिशत संयुक्त परिवार है। उत्तरदाता के व्यवसाय के प्रकार के अन्तर्गत सर्वाधिक 66.80 प्रतिशत कृषि, 25.51 प्रतिशत व्यवसाय, 7.69 प्रतिशत शासकीय अथवा गैर–शासकीय नौकरी में संलग्न है। सर्वेक्षित परिवारों में जल आपूर्ति के लिए उपलब्ध स्रोत के अन्तर्गत सर्वाधिक 49.80 प्रतिशत सार्वजनिक जल वितरण प्रणाली अन्तर्गत नल सुविधा से पानी प्राप्त करते है। 8.50 प्रतिशत परिवार कुएँ का पानी, 18.22 प्रतिशत गली मोहल्ले में उपलब्ध सार्वजनिक हैण्ड पम्प, 10.93 प्रतिशत परिवार स्वयं के आवास अथवा पड़ोस में उपलब्ध बोरवेल से पानी प्राप्त करते हैं एवं 12.55 प्रतिशत अन्य माध्यम जिनमें निजी अथवा सार्वजनिक टेंकर, नदी, तालाब अथवा अन्य स्रोतों से उपलब्ध जल का उपयोग करते है।

घरेलू कार्यो में पानी उपयोग की मात्रा– उत्तरदाताओं द्वारा विभिन्न घरेलू आवश्यकता एवं कार्यो में जल उपयोग की जानकारी तालिका 2 में दर्शाया गया है।

तालिका –2: सर्वेक्षित परिवारों में विविध कार्यो में प्रतिदिन प्रयुक्त पानी की मात्रा (लीटर में)

क्र.	उपयोग	N	Minimum	Maximum	Mean	Std. Deviation	Rank
1	नहाना	247	90.00	870.00	480.68	304.51	2
2	पीने का पानी	247	20.00	70.00	35.99	51.31	9
3	कपड़े धोना	247	125.00	950.00	658.84	367.05	1
4	बर्तन साफ करना	247	115.00	230.00	145.72	147.21	7
5	खाना पकाना	247	20.00	164.00	88.62	45.17	8
6	पौधों को पानी देना	247	130.00	260.00	208.93	128.85	5
7	घर की सफाई	247	70.00	227.00	177.13	199.47	6
8	शौचालय उपयोग	163	120.00	690.00	287.09	302.86	3
9	अन्य	247	20.00	380.00	213.38	154.81	4

स्रोत: – प्राथमिक समंक विश्लेषण।

किसी परिवार को घरेलू आवश्यकता हेतु पानी की कितनी मात्रा की आवश्यकता होती है, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। कृषि एवं उत्पादन के अतिरिक्त सभी प्रकार की घरेलु आवश्यकताओं के आधार पर सामान्यत: गांवों में प्रतिदिन 30–70 लीटर प्रति परिवार पानी का प्रयोग होता है, जबकि शहर का एक व्यक्ति 100 से 450 लीटर तक पानी प्रयोग पीने एवं खाना बनाने, शौचालय, स्नान, कपड़े धोने, साफ–सफाई इत्यादी कार्य किये जाते हैं। उपरोक्त तालिका 2 के अनुसार सर्वेक्षित परिवारों में सर्वाधिक पानी उपयोग कपड़े धोने, नहाने एवं शौचालय में खर्च होता है। सर्वेक्षित परिवारों में कपड़े धोने के लिए प्रतिदिन न्यूनतम 125 लीटर एवं अधिकतम 950 लीटर प्रयोग किया जाता है। माध्य (658.84) एवं प्रमाप विचलन (367.05) लीटर है। नहाने के लिए प्रतिदिन न्यूनतम 90 लीटर एवं अधिकतम 870 लीटर प्रयोग किया जाता है। माध्य (480.68) एवं प्रमाप विचलन (504.51) लीटर है। शौचालय के लिए प्रतिदिन न्यूनतम 120

लीटर एवं अधिकतम 690 लीटर प्रयोग किया जाता है। माध्य (287.09) एवं प्रमाप विचलन (302.86) लीटर है। पीने के लिए प्रतिदिन न्यूनतम 20 लीटर एवं अधिकतम 70 लीटर प्रयोग किया जाता है। माध्य (35.99) एवं प्रमाप विचलन (51.31) लीटर है। विश्लेषण से स्पष्ट है कि चयनित ग्रामीण परिवारों में घरेलू उद्देश्यों के लिए वास्तविक जल खपत का आकार और परिवर्तनशीलता, दिशानिर्देशों में दिए गए मानों से बहुत अधिक है। परिवारों में सर्वाधिक पानी का उपयोग कपड़े धोने के लिए खर्च होता है। क्योंकि परिवारों में केवल पहने जाने वाले कपड़ों के अतिरिक्त पर्दे, चादर, कम्बल, कवर, इत्यादि होते है। जिनकी धुलाई नियमित रूप से परिवारों में की जाती है।

जल संरक्षण के प्रति सामान्य कार्य व्यवहार – अध्ययन में सर्वेक्षित परिवारों में उपलब्ध कुल पानी के उपयोग और उपभोग के तरीकों में अत्यधिक भिन्नता है। विभिन्न परिवारों में जल संरक्षण के लिए किये जाने वाले सामान्य कार्य व्यवहार की जानकारी को तालिका 3 में दर्शाया गया है–

तालिका – 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

उपरोक्त तालिका 3 के अनुसार सर्वेक्षित परिवारों में 24.7 प्रतिशत सदैव लीकेज वाले नलों की जाँच कर उन्हें ठीक करते है। जबकि सर्वाधिक 59.51 प्रतिशत कभी–कभी एवं 15.79 प्रतिशत परिवारों में लीकेज वाले नलों को ठीक नहीं करते है। 21.05 प्रतिशत परिवारें में बारिश का पानी इकट्ठा करते हैं। जबकि सर्वाधिक 41.30 प्रतिशत कभी–कभी एवं 37.65 प्रतिशत परिवारों में बारिश का पानी संग्रहित नहीं करते है। अधिंकांश परिवारों में पानी संग्रहण के लिए स्थान एवं साधनों का अभाव है। 10.53 प्रतिशत उत्तरदाता पानी की बचत के लिए नहाने पर कम समय लगाते है। जबकि सर्वाधिक 36.44 प्रतिशत कभी–कभी एवं 53.04 प्रतिशत पानी की बचत के लिए नहाने पर समय नहीं लगाते है। 3.24 प्रतिशत शौचालय सफाई के लिए कम पानी का प्रयोग करते है। जबकि 41.70 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 55.06 प्रतिशत पानी की बचत के लिए शौचालय सफाई के लिए कम पानी का प्रयोग नहीं करते है। 22.67 प्रतिशत वाहन धोने के लिए कम पानी प्रयोग करते है। जबकि 31.58 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 45.75 प्रतिशत पानी की बचत के लिए वाहन धोने के लिए कम पानी प्रयोग नहीं करते हैं। 16.19 प्रतिशत कपड़े धोने के लिए कम पानी प्रयोग करते है। जबकि 25.91 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 57.89 प्रतिशत पानी की बचत के लिए कपड़े धोने के लिए कम पानी प्रयोग नहीं करते हैं। 8.50 प्रतिशत रसोई में खाना पकाने एवं बर्तन धोंने के लिए कम से कम पानी का प्रयोग करते है। जबकि 33.20 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 58.30 प्रतिशत पानी की बचत के लिए रसोई में कम पानी का प्रयोग नहीं करते हैं। 7.69 प्रतिशत एक बार उपयोग हो चुका गन्दा पानी बगीचे में प्रयोग है। जबकि 26.72 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 65.59 प्रतिशत पानी की बचत के लिए एक बार उपयोग हो चुका गन्दा पानी बगीचे में प्रयोग नहीं करते हैं। 33.20 प्रतिशत दांत ब्रश करते, हाथ धोते (साबुन लगाने) समय सदैव नल बंद कर देते है? या किसी पात्र में पानी लेकर हाथ, दांत एवं मुहँ धोते है। जबकि 51.82 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 14.98 प्रतिशत दांत ब्रश करते, हाथ धोते (साबुन लगाने) समय सदैव नल बंद नही करते है? ना ही किसी पात्र में पानी लेकर हाथ, दांत एवं मुहँ धोते हैं। जल की पर्याप्त उपलब्धता है, इसलिए सर्वाधिक सदस्य अनजान हैं कि वे प्रतिदिन कितना पानी बर्बाद करते हैं। बहते पानी से दाँत ब्रश करने या देर तक नहाते रहने जैसी छोटी–छोटी आदतें भी पानी की बहुत अधिक बर्बादी करती हैं। 33.20 प्रतिशत बगीचे में पौधो को पाईप/बाल्टी की सहायता से आवश्यकतानुसार पानी देते है। जबकि 51.82 प्रतिशत कभी–कभी एवं सर्वाधिक 14.98 प्रतिशत पानी की बचत के लिए बगीचे में पौधो को पाईप/बाल्टी की सहायता से आवश्यकतानुसार पानी नहीं देते हैं। ऐसे परिवार जिनमें पानी की पर्याप्त सुविधा है वे अधिक पानी बर्बाद करते है जबकि जिन परिवारों में पानी की सुविधा उपलब्ध नहीं है अथवा आपूर्ति अपर्याप्त है ऐसे परिवार पानी का उपयोग मितव्वयी तरीके से करते है।

परिकल्पना परीक्षण :

H_{a1}: ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति एवं घरेलू कार्यो में उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है।

H_{a2}: जल संरक्षण के प्रति व्यवहार का सामाजिक कारकों के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है।

Chi-Square Tests

No.	Pearson Chi-Square	Value	df	Asymp. Sig. (2-sided)	Correlation
1	H_{a1}	196.609	1	0.000	+0.76
2	H_{a2}	121.311	1	0.000	+0.83
	No. of Valid Cases	**247.00**			

परिकल्पना 1 का परिकलित काई वर्ग मान 196.609 है एवं परिकल्पना 2 का परिकलित काई वर्ग मान 121.311 है, जो सारणीबद्ध मान 3.841 से अधिक है। इसलिए H_0 को 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति एवं घरेलू कार्यो में उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है। उच्च आय वर्ग के लोग निम्न आय वर्ग के लोगों की तुलना में अधिक पानी का उपयोग करते हैं। जल संरक्षण के प्रति व्यवहार एवं सामाजिक कारकों के मध्य महत्वपूर्ण सार्थक सम्बन्ध है। परिवार में प्रयुक्त जल के मितवी उपयोग के व्यवहार के विकास में सामाजिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

निष्कर्ष – उक्त शोधपत्र घरेलू जल संरक्षण के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। पर्यावरण–समर्थक परिवार आमतौर पर कम पानी का उपयोग करते हैं, विशेष रूप से बगीचे की सिंचाई और कपड़े धोने, अत्यधिक स्नान जैसी विवेकाधीन गतिविधियों के लिए जल–बचत तकनीकों को अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं। हालाँकि पारिवारिक आय, शिक्षा, परिवार की प्रकृति एवं आकार जैसे कारक जल–बचत व्यवहारों के कार्यान्वयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। उच्च आय वाले परिवार अपनी पर्यावरणीय जागरूकता के बावजूद बड़ी संपत्तियों और विलासितापूर्ण उपकरणों के कारण अधिक पानी का उपयोग करते हैं। जबकि निम्न आय वाले परिवार व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर कम जल उपयोग करते हैं। भौगोलिक दृष्टि से जल आपूर्ति विहीन क्षेत्रों के परिवार, जल की प्रचुर आपूर्ति क्षेत्रों के परिवारों की तुलना में जल संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक हैं। नीति निर्माताओं और जल प्रबंधन सम्बन्धित शासकीय एवं गैर–शासकीय संस्थाओं को जल संरक्षण सम्बन्धी जागरूकता के लिए उपयोगकर्ता के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक–आर्थिक कारकों के अतिरिक्त वित्तीय प्रोत्साहन, जल संरक्षण तकनीकी शिक्षा, जल संरक्षण से संबंधित

पाठ्य सामग्री, विडियों और प्रेरक कहानियाँ फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग जल संरक्षण के प्रति व्यावहारिक प्रवृत्ति में परिवर्तन के लिए किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Sudheer B. S., Lewlyn L. R., Sriram K. V., (2022): "Holistic Approach to Water Conservation Behavior in Urban Environment: A Systematic Literature Review," Urban Water Journal, vol. 19, no. 7, pp. 651-672, 2022. DOI: 10.1080/1573062X. 2022.2075765
2. Kapur, A. (2009): 'On disasters in India' New Delhi: Cambridge University Press.
3. Agarwal, A.; Narain, S. and Khurana, I. 2001. Making water everybody¼s business. New Delhi: Centre for Science and Environment.
4. Abrahamse, W., Steg, L., Vlek, C., & Rothengatter, T. (2005). A review of intervention studies aimed at household energy conservation. Journal of Environmental Psychology, 25(3), 273–291
5. श्री प्रसाद. सुखदेव. (2010).'पर्यावरण और हम', सम्राट प्रिंटर नया सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय उदयपुर (राजस्थान)।
6. Werts. D. Joshua., Mihailova. A. Elena., Post. J. Christopher., Sharp. L. Julia.(2012). An Integrated WebGIS Frame Work for Volunteered Geographic Information and Social Media in Soil and Water Conservation. https://link.springer.com/article/10.1007/s00267-012-9818-5#Sec1
7. अरोड़ा कुमार सुनील. (जुलाई,2022). जल शक्ति अभियान 'कैच द रेन' कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास को समर्पित. प्रकाशन विभाग. सूचना भवन सी.जी.ओ. काम्पलेक्स. लोधी रोड, नई दिल्ली.
8. अरिन एवं डॉ. कुँवर सुरेन्द्र बहादुर (2023) 'जल संरक्षण जागरूकता एवं न्यू मीडिया अभियानों का एक अध्ययन' अपनी माटी, साहित्य और समाज का दस्तावेजीकरण, त्रैमासिक पत्रिका, Peer Reviewed & Refereed Journal, E-ISSN 2322-0724 अंक-61 मार्च 2023, पृ. 46
9. नंदकिशोर सक्सेना, डॉ. सिंधु जे. नायर (2025) 'वर्षा जल संचयन- एक साहित्य समीक्षा' IJSREM, e-Journal Vol 09, Sep. 2025, ISSN2582-3930.

तालिका - 3: जल संरक्षण के प्रति उत्तरदाता द्वारा किये जाने वाले सामान्य कार्य व्यवहार

क्र.	विवरण (N=247)	कभी नहीं	कभी-कभी	सदैव	कुल
1	लीकेज वाले नलों की जाँच कर उन्हें ठीक करते है?	15.79%	59.51%	24.70%	100%
2	बारिश का पानी संग्रहित करते हैं?	37.65%	41.30%	21.05%	100%
3	पानी की बचत के लिए नहाने के लिए कम समय लगाते है? (5 मिनट या उससे कम)	53.04%	36.44%	10.53%	100%
4	शौचालय सफाई के लिए कम पानी का प्रयोग करते है?	55.06%	41.70%	3.24%	100%
5	वाहन धोने के लिए कम पानी प्रयोग करते हैं? (जैसे, बाल्टी से या किसी कुशल उपकरण द्वारा)	45.75%	31.58%	22.67%	100%
6	कपड़े धोने के लिए कम पानी प्रयोग करते हैं? (जैसे, बाल्टी से या किसी कुशल उपकरण द्वारा)	25.91%	57.89%	16.19%	100%
7	रसोई में कम से कम पानी का प्रयोग करते है? (जैसे, खाना पकाने, बर्तन धोने के लिए)	58.30%	33.20%	8.50%	100%
8	एक बार उपयोग हो चुका गन्दा पानी बगीचे में प्रयोग करते है?	65.59%	26.72%	7.69%	100%
9	दांत ब्रश करते, हाथ धोते (साबुन लगाने) समय सदैव नल बंद कर देते है? या किसी पात्र में पानी लेकर हाथ, दांत एवं मुहँ धोते है?	16.60%	45.75%	37.65%	100%
10	बगीचे में पौधो को पाईप/बाल्टी की सहायता से आवश्यकतानुसार पानी देते है?	14.98%	51.82%	33.20%	100%

स्रोत:- प्राथमिक समंक विश्लेषण।

****